

વિક્રમ સંવત-૨૦૩૬, ભાદરવા સુદ-૧૦, શુક્રવાર, તા. ૧૯-૯-૧૯૮૦
વચનામૃત-૩૯૩, ૩૯૪, ૩૯૬. પ્રવચન નં. ૩૮

આજ દસલક્ષણી ધર્મમેંસે છઠા બોલ હૈ, છઠા દિન હૈ ન? સંયમ.. સંયમ. ઉત્તમ સંયમકા દિન હૈ.

જો જીવરક્ષણપરો, ગમણાગમણાદિસવ્વકજ્જેસુ।

તણછેદં પિ ણ ઇચ્છદિ, સંજમધમ્મો હવે તસ્સા।૩૧૧।।

આહાહા..! પહલે બાત જ્ઞાનની તો પડેગી ન? ભલે સંયમ પાલ ન સકે. સંયમ ભી સમકિત બિના હોતા નહીં. પહલે આત્મદર્શન હોતા હૈ, બાદમેં સંયમ હોતા હૈ. ઉસ સંયમમેં ઐસા હૈ કિ છકાયકે જીવકી રક્ષામેં તત્પર, ઐસા પાઠ હૈ. ઉસકા અર્થ કિ કોઈ પ્રાણીકો મારનેકા ભાવ નહીં હૈ. રક્ષાકા અર્થ ઐસા નહીં હૈ કિ રક્ષા કર સકતે હૈં. પરજીવકી રક્ષા કર સકતે હૈં, ઐસી બાત હૈ નહીં. યહાં વહ શબ્દ પડા હૈ. ‘રક્ષામેં તત્પર...’ અર્થાત્ કોઈ ભી પ્રાણીકો થોડા ભી દુઃખ હો, ઐસા ન કરે. ઔર એક તૃણકા-તિનકેકા છેદ ભી ન કરે. આહાહા..! સંયમ હૈ, કિસકો કલતે હૈં? એક તો આત્મજ્ઞાન અંતર આનંદ પૂર્ણાનંદ સ્વરૂપ, ઉસમેં દષ્ટિ ઘુસ ગયી. બાદમેં સંયમ અંદર સ્વરૂપમેં વિશેષ રમણતા કરના, વહ સંયમ હૈ. યહાં સંયમમેં તો વહાં તક કહા કિ એક તિનકેકા છેદ કરના, વહ ભી ઈચ્છતા નહીં. તિનકેકા છેદ કર સકતા હૈ, ઐસા પ્રશ્ન નહીં હૈ.

યહાં દો પ્રશ્ન હૈ-એક તો જીવકી રક્ષા ઐસા શબ્દ હૈ. ઉસકા અર્થ જીવકી રક્ષા કર સકતા હૈ, ઐસા નહીં. જીવકો નહીં મારનેકા ભાવ ઔર અંતરમેં રમનેકા ભાવ, વહ જીવકી રક્ષા નામ જીવકો દુઃખ ન દેનેકા ભાવ. આહાહા..! દૂસરી બાત-તિનકા. એક તિનકેકા તો દો છેદ ન કરે. ઉસકા અર્થ તિનકેકા છેદ કર સકતા હૈ, ઐસા નહીં.

શ્રીમદ્ રાજચંદ્રને ભી એક પત્રમેં ઐસા લિખા હૈ. શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર. હમારેમેં એક તૃણ હમારી ગુજરાતી ભાષા હૈ-તૃણ, તિનકેકા દો ટૂકડા કરનેકી હમારી શક્તિ નહીં હૈ. એક તિનકેકા દો ટૂકડા કરના, યહ હમારી શક્તિ નહીં. અર્થાત્ આત્મા પરદ્રવ્યકા કુછ કર સકતા નહીં. અરે..! યહ બાત. એક તિનકા, ઇલકા.. ઇલકા, ઉસકા દો

टूकडा कर सकता नहीं. परंतु दो टूकडे लोते हैं तो मैं हूं तो ठीक हुआ, ऐसा भी है नहीं. आलाहा..! ऐसी बात. बहुत सूक्ष्म बात, प्रभु! उसका नाम संयम है. संयम जैसे पंच महाव्रत अथवा बाह्य किया वह संयम है, ऐसा नहीं. अंतरमें अके अपना द्रव्य दूसरे द्रव्यको छूता भी नहीं और दूसरे द्रव्यका दो टूकडा करना या रक्ष करना या मारना, वह आत्मा तो कर सकता ही नहीं. आला..! पर ओरसे लक्ष्य छोडकर अपना आनंदस्वरूप भगवान आत्मा, उसमें रमणता करते हैं, उसका नाम संयम कलनेमें आता है. आलाहा..!

उसका यहां दो अर्थ लिया है. श्रवकी रक्षा करते हैं. 'श्रवोंकी रक्षामें तत्पर होता हुआ गमन आगमन आदि सब कार्योंमें...' गमन आगमन करते हैं, उन सब कार्योंमें 'तृणका छेदमात्र भी नहीं रहता है,...' आलाहा..! ये स्वामी कार्तिकिय. कुंडकुंदाचार्यके पहले लो गये. २२०० साल लो गये. पहले यह बनाया है, कार्तिकियानुप्रेक्षा. आलाहा..! वे कहते हैं कि अके तिनकेका छेद करना, वह भी आत्माके अधिकारकी बात नहीं है. आलाहा..! तो इस दुनियाकी कैसे रचना की होगी? आलाहा..!

अपनी चीजका पहले तो भान हुआ. ज्ञाता-दृष्टा आनंद हूं. मैं परका स्वामी नहीं हूं. पर चीज मेरी है, ऐसा मेरा कोई असंज्य प्रदेशमें है नहीं. परंतु मेरेसे तिनकेका टूकडा भी लो, वह नहीं है. और मेरेसे कोई प्राणीको थोडा भी दुःख लो (ऐसा नहीं है). सब सुभी लोओ. आला..! मुझे प्रतिकूलता देकर भी यदि तुम सुभी लोते लो तो भले तुम सुभी लोओ, परंतु दुःखी कोई न लो. और किसीको दुःखी करनेका ज्ञानीका, संयमीका भाव होता नहीं. उसका नाम संयम है. आलाहा..! अब अपना चलता अधिकार. ३८३. आभिरकी पंक्ति बाकी है. ३८३.

'ऐसी साधक...' वहांसे है न? ३८३की आभिरकी तीन पंक्ति है, ढाई पंक्ति है. 'ऐसी साधकपरिणतिकी अटपटी रीतिको...' क्या कहते हैं? आलाहा..! दृष्टिका विषयभूत ऐसा जो निष्किय द्रव्य. सम्यग्दर्शन, प्रथममें प्रथम उसका विषय-ध्येय तो अकेला द्रव्य है. सम्यग्दर्शनका विषय कोई पर्याय, गुणभेद, परकी रक्षा करना, नहीं मारना वह कुछ है नहीं. समकितका पहला विषय त्रिकावी चीज भगवान आत्मा.. वह आया? 'निष्किय द्रव्य वह अधिकका अधिक रहता है.' आलाहा..! बहुत सूक्ष्म बात. धर्मीश्रवको सम्यग्दृष्टि या मुनिको क्षण-क्षणमें अपना निष्किय द्रव्य (अधिकका अधिक रहता है). निष्किय द्रव्य अर्थात् जिसमें रागकी और पर्यायकी किया नहीं है ऐसी त्रिकावी चीज. आलाहा..! पर्यायमें निर्णय करता है. पर्यायमें आनंदादिका अनुभव करता है, परंतु पर्याय सक्रिय है. वह त्रिकावीमें है नहीं. आलाहा..! ऐसा

‘निष्किय द्रव्य अधिकका अधिक रहता है.’ आलाला..! ऐसी बातें.

‘ऐसी साधकपरिणतिकी...’ धर्माञ्चके साधनकी दशा ऐसी अटपटी रीतिको, ‘ऐसी अटपटी रीतिको ज्ञानी बराबर समझते हैं,...’ आलाला..! क्या समझमें आया? द्रव्य तो निष्किय ही है. द्रव्यमें तो पर्यायिका परिणामन जो होता है, वह द्रव्यमें नहीं, अंदरमें नहीं है. आलाला..! फिर भी बाह्यकी क्रिया दिखती है, चलना-फिरना, गमन (करना), वह सब क्रिया जडकी है. उसे ज्ञान ज्ञानता है कि यह क्रिया होती है. परंतु वह मेरी नहीं. मैं तो निष्किय द्रव्य चैतन्य हूं. ऐसी धर्माङ्गी कोई भी क्षण द्रव्यदृष्टिसे लटती नहीं. आलाला..!

‘दूसरोंको समझना कठिन होता है.’ है? ऐसी साधकपरिणतिकी अटपटी रीति. एक ओर द्रव्य निष्किय और एक ओर पर्यायिकमें दया, दान, व्रतका भाव भी आता है और पर्यायिकमें निर्मलता भी प्रगट हुई है. आलाला..! धर्माङ्गी पर्यायिकमें वस्तु निष्किय है त्रिकावी. परंतु उसकी दृष्टि करनेसे पर्यायिकमें निर्मलता प्रगट होती है. वह निर्मलता है और साथमें कमजोरीके कारण राग, दया, दानका भाव भी होता है. परंतु उसको जानते हैं कि वह मेरी चीज नहीं है. आलाला..! ‘ऐसी साधकपरिणतिकी अटपटी रीतिको ज्ञानी बराबर समझते हैं, दूसरोंको समझना कठिन होता है.’ कठिन. अशक्य नहीं. समझ सके नहीं ऐसा नहीं. आलाला..!

जिसकी दरकार ही नहीं, जिसको अपना स्वभाव और विभावका भेदज्ञान ही नहीं है और भेदज्ञान करनेका प्रयत्न और प्रयास भी नहीं है, उसको तो यह बात बहुत कठिन लगे. कठिन लगे, परंतु अशक्य नहीं है. समझमें न आवे ऐसी बात है नहीं. ध्यान रहे, समझ करे, रस चढ़े, दुनियाका रस कम करे तो आत्माका रस बढ़ता है. लेकिन बहुत कठिन बात (है), अटपटी बात है. अब, ३६४.

मुनिराजके हृदयमें एक आत्मा ही विराजता है. उनका सर्व प्रवर्तन आत्मात्म ही है. आत्माके आश्रयसे बडी निर्भयता प्रगट हुई है. घोर जंगल हो, घनी झाडी हो, सिंह-व्याघ्र दहाडते हों, मेघाच्छन्न डरावनी रात हो, यारों ओर अंधकार व्याप्त हो, वहां गिरिगुफा में बस अकेले चैतन्यमें ही मस्त होकर निवास करते हैं. आत्मामेंसे बाहर आये तो श्रुतादिके चिंतपनमें चित लगता है और फिर अंतरमें चले जाते हैं. स्वप्नके भ्रूतेमें भ्रूते हैं. मुनिराजको एक आत्मलीनताका ही काम है. अद्भुत दशा है. ३६४.

३८४. 'मुनिराजके हृदयमें...' आलाला..! मुनि किसको कहते हैं? 'मुनिराजके हृदयमें एक आत्मा ही विराजता है.' आलाला..! चैतन्य सहजात्म स्वरूप सहज स्वरूप. वह श्रीमद्का वाक्य है. श्रीमद्का अगास है न? उसका यह मंत्र है. सहजात्म स्वरूप. कोई भी आये उसे मंत्र देता है. सहजात्म स्वरूप. सहज आत्म-स्वाभाविक आत्म स्वरूप. 'मुनिराजके हृदयमें एक आत्मा ही विराजता है.' बाहरकी चीज तो बाहरमें रहती है. आलाला..! 'उनका सर्व प्रवर्तन आत्माय ही है.' आत्माय ही है. भाषा देओ! आलाला..! यह दसलक्षणी धर्म है. संयमकी यह चीज है. 'उनका सर्व प्रवर्तन आत्माय ही है.' अंतर भगवान आत्मा ज्ञानस्वरूप (है). तो मुनिराजका सर्व वर्तन ज्ञानमय ही है. ज्ञानना-देजनामय ही उसकी क्रिया है.

'आत्माके आश्रयसे बड़ी निर्भयता प्रगट हुई है.' आलाला..! मैं आत्मा शाश्वत सत्ता, उसको कोई स्पर्श कर सके नहीं तो उसको कोई मार सके ऐसी चीज है नहीं. धर्मीकी यह दृष्टि है. आलाला..! मेरा आत्मा, उसके आश्रयसे.. आश्रय लिया त्रिकावी ज्ञायक स्वरूपका. सूक्ष्म बात है, भाई! अभी तो बाहरमें स्थूलता चलती है, इसलिये यह बात समजनेमें कठिन पड़े, परंतु अशक्य नहीं है. संतोंने पंचम आरेके ज्वोके लिये यह कहा है. पंचम आराके साधु, पंचम आराके श्रोताके लिये कहा है. आलाला..! ऐसा नहीं समजना कि यह तो यौथे आरेकी बात है. आलाला..! कुंडकुंदाचार्य, अमृतचंद्राचार्य, पद्मप्रभमलधारीदेव सब पंचम आरेके साधु थे और पंचम आराके श्रोताको समजते हैं. ऐसा नहीं है कि पंचम आराके प्राणीको यह बात समजमें न आवे. आला..! उसके लिये तो शास्त्र बनाया. आलाला..! पंचम आराके..

समयसार ३८वीं गाथामें है, अप्रतिबुद्ध था. अनादिसे अप्रतिबुद्ध था, उसको गुरुने समजया. पंचम आराका प्राणी. आलाला..! समजमें आया? पंचम आराका अबुध प्राणी, अप्रतिबुद्ध-भान बिनाके प्राणीको... ३८ गाथामें है, समयसार. उसको गुरुने समजया. शास्त्रमें ३८ (गाथामें) तो ऐसा लेज है कि समजया तो वह समज गया. ओलो..! मैं तो आत्मा आनंद और ज्ञानस्वरूप हूं. समज तो गया, परंतु उसको ऐसा निर्णय हो गया, पंचम आराके प्राणीको, उसकी बात करते हैं. पंचम आराके प्राणीको (समजया). साधु थे वे पंचम आराके थे और श्रोता भी पंचम आराका है. पंचम आराका श्रोता अप्रतिबुद्ध था, बिलकुल अज्ञानी (था). परंतु गुरुने समजया (तो) ऐसा समज गया.. आलाला..! संस्कृत टीकामें पाठ ऐसा है कि ऐसा समज गया कि अब मैं मेरी चीजसे कभी छूटंगा नहीं. मेरा समकित अब गिरेगा नहीं. सेठ! पांचवे आराका (शिष्य कहता है).

मुमुक्षु :- कोई-कोई समझे.

उत्तर :- भले कोई समझे. परंतु यहां तो यह कहना है कि वह ऐसा समझ, सम्यग्दर्शन ऐसा प्राप्त किया, ज्ञान-चारित्र्य भी प्राप्त किया और कहे कि मैं उससे-सम्यग्दर्शनसे कभी गिरूंगा नहीं. निःशंक हूं. पंचम आरामें अप्रतिबुद्ध था, मुझे गुरुने समझाया और मैं अपना स्वरूप समझ तो मैं कहता हूं कि मैं सम्यग्दर्शनसे... भगवानका विरह है, केवलीका विरह है, लेकिन मैं कहता हूं मेरे आत्माकी साक्षीसे. ऐसा कहता है. उटवीं गाथामें है. मैं नहीं गिरूंगा. आलाला..! मैं सम्यग्दर्शनसे, भले पंचम आरामें आया, परंतु मैं नहीं गिरूंगा. निःशंक ऐसा कहता है. भगवानका विरह है, भगवान है नहीं. आत्मा है न! आलाला..! अरे..! ऐसी बातें हैं.

यहां यह कहते हैं, 'बड़ी निर्भयता प्रगट हुई है.' आलाला..! कोई भय ही नहीं है. पक्के किलेमें जैसे किसीका भय नहीं हो. पक्का किला हो, किला अरे..! वज्रका किला हो तो किसीका भय नहीं (होता). जैसे भगवान आत्मा शाश्वत सनातन चैतन्यप्रभु, उसकी जहां दृष्टि और भान हुआ तो निर्भयता प्रगट हुई है. 'बड़ी निर्भयता प्रगट हुई है.' मुनिकी बात करते हैं.

'घोर जंगल हो, घनी जाड़ी हो, सिंह-व्याघ्र दहाइते हों,...' सिंह और बाघ दहाइते हो अर्थात् पुकार करते हो. पुकार करते हैं. सिंह और बाघकी आवाज जंगलमेंसे आती हो, फिर भी मुनि अंदर ध्यानमें आनंदमें रहते हैं. आलाला..! यह आत्माकी चीज है. आलाला..! कहते हैं, सिंह और बाघ दहाइते हों, यानी आवाज-पुकार करते हो. आलाला..! परंतु मुनिको भय नहीं है. अंतरमें आनंदमें रहते हैं. आलाला..! है? 'भेद्यच्छत्र उरावनी रात हो,...' जैसे काले बादल आ गये और उरावनी रात हो. 'चारों ओर अंधकार व्याप्त हो, वहां गिरिगुफामें मुनिराज बस अकेले चैतन्यमें ही मस्त होकर...' आलाला..!

वैसे भी चैतन्यके सिवा बाहर कहां जा सकते हैं. कल्पना कर सकता है कि मैं ऐसा करूं, मैं ऐसा करूं, ऐसा करूं. ऐसी कल्पना करते हैं. बाकी बाहरको तो छूता भी नहीं. परद्रव्यको तो आत्मा कभी तीन कालमें छूता नहीं. ऐसा समयसारकी तीसरी गाथामें आया है. एक द्रव्य-तत्त्व दूसरे तत्त्वको कभी छूता नहीं. आलाला..! कैसे बैठे? पूरा दिन शरीरसे काम लेता है, टिभता है, वाणीसे काम लेता है, टिभता है. आलाला..! नौकरयाकरसे काम लेते हैं, उसे टिभते हैं और उसको कहना कि वह कुछ करता नहीं. क्या करता है? वह तो अंदर अभिमान करता है, उतना करता है, बस! वह किया नहीं कर सकता है. आलाला..! यह बात अंदरमें बैठनी.. वीतराग

सर्वज्ञ परमेश्वर.. उसकी ऐसी पर्याय लो गयी है. द्रव्य तो त्रिकाली ध्रुव है. परंतु पर्याय ऐसी लो गई. पर्याय समझे? अवस्था.

‘गिरिगुहामें मुनिराज बस अकेले चैतन्यमें ही मस्त...’ यह पर्याय. चैतन्यमें मस्त रहते हैं वह पर्याय है. आला..! पर्याय अर्थात् अवस्था. आला..! त्रिकाली ध्रुव चैतन्य भगवान, उसमें पर्यायमें मस्त रहते हैं. अंदरमें पर्याय ध्रुव सन्मुख अकाकार कर लेते हैं. आला..! ऐसा मार्ग है, प्रभु! कठिन लगे, क्या करे? भगवानका विरह पडा. आला..! दूसरा मार्ग लो जाता है? जयपुरमें मनोहरलावज आये थे. मनोहरलावज. सेठ! वर्षाजके शिष्य मनोहरलावज. मनोहरलावज यल बसे. किसिने मार डाला. वहां जयपुर आये थे. और प्रश्न किया था. दो प्रश्न किये. अक तो- महाराज! राग और द्वेष, पुण्य और पापको भगवानने पुद्गल कला, ऐसा क्यों? मनोहरलावजने प्रश्न किया.

मुमुक्षु :- वे साथमें थे. उन्होंने कला कि आप बाहर जाईये, मुझे महाराजसे पूछना है.

उत्तर :- आला..! वह बात ऐसी पूछी कि, महाराज! भगवानने ऐसा क्यों कला? दयाका भाव, सत्यका भाव, भक्तिका भाव पुद्गल? कला, भाई! वह चीज निकल जाती है. अपनी चीज लो तो निकले नहीं. अपनेमें है वह निकले नहीं और निकले वह अपनी नहीं. सिद्धमें राग-द्वेष रहते नहीं. यदि अपनी चीज लो तो सिद्धमें भी लोनी चालिये. आला..! अक प्रश्न यह था.

दूसरा प्रश्न यह था. आप उद्देशिकका स्पष्टिकरण कीजिये तो बहुत (लाभ लोगा). क्या स्पष्टिकरण? (उनको ऐसा कलना था कि), गृहस्थ बनाते हैं. करनेको कलते नहीं कि मेरे लिये बनाओ. तो उसके लिये बनाया और लेते हैं तो उसमें क्या है? उसमें उद्देशिक दोष क्या आया? ऐसा प्रश्न किया. भाई! मैं तो ऐसा कलता हूं, अरे..! भगवान विरह पडा. त्रिलोकनाथके विरहमें ऐसा अर्थ करना कि उसके लिये बनाया हुआ आहार उद्देशिक लेते हैं, उसे उद्देशिक नहीं कलते. प्रभुका विरह पडा है, हम ऐसा नहीं कलेंगे. आला..! उसके लिये बनाते हैं, वह लेते हैं, वह उद्देशिक नहीं. क्योंकि वह करते नहीं है, करवाते नहीं है. वे तो मात्र बनाया हुआ लेते हैं. तो वह उद्देशिक नहीं, ऐसा कुछ कलो तो बहुत संप लो जाय. अरे..! भाई! भगवानका विरह पडा, प्रभुके पीछे ऐसा अर्थ करना,..? आला..! मैंने तो थोडा शांतिसे ऐसा भी कला,.. उनके मकानमें थे न? गोदिकाके मकानमें, उपरकी भंजिल पर.

मैं तो बैया! ऐसा मानता हूँ कि वर्तमाने जो दिभते हैं, वह द्रव्यविंगी क्षुद्धक भी नहीं है. शांतिसे कला. कोई अपमान, अनादर करनेका अपना भाव नहीं था. मात्र सत्य क्या है? भगवान त्रिलोकनाथका विरह पडा, उनके पीछे उसका अर्थ विपरीत करना, प्रभु! ऐसा अभी नहीं हो सकता. क्योंकि आहार उसके लिये बनाते हैं और वह लेते हैं तो वह अनुमोदन है. मन-वचन-काया, करना-करवाना-अनुमोदन इन नव कोटिमें अनुमोदन है. अनुमोदन है तो नव कोटि टूट जाती है. आहा..! समझमें आया? थोडा उनको ऐसा लगा. मैंने तो कला, मुझे तो कोई द्रव्यविंगी क्षुद्धक भी दिभते नहीं. क्योंकि उसके लिये बनाते हैं और लेते हैं. दूसरा तो कोई उपाय नहीं है. काल ऐसा है. जैसे कोई तैयार है नहीं, धर्मी तैयार है नहीं, और ऐसा घरमें तैयार माल है नहीं. साधुको ध्यानमें रभकर उसके लिये पानी बनाये, आमरस बनाये, मोसंबीका पानी बनाये और बादमें प्लोरते हैं. वह सब प्रभुका मार्ग नहीं है, भाई!

यहां तो कहते हैं, आहाहा..! गिरिगुफामें मुनिराज चले जाते हैं. जिन्हें दृनियाकी कोई दरकार नहीं है. 'मुनिराज बस अकेले चैतन्यमें मस्त होकर निवास करते हैं.' चैतन्यमें मस्त होकर निवास करते हैं. आहा..! बाहरमें दिभता है, मानों यह करते हैं, चलते हैं, फिरते हैं, वह सब क्रियाके कर्ता वे हैं नहीं. अंतर चैतन्यमें रागादि दया, दान महाप्रतका आता है. उसका भी वे कर्ता नहीं. आहाहा..! वे तो चैतन्यस्वरूप भगवान आत्मा उसमें मस्त हैं. है? 'अकेले चैतन्यमें मस्त होकर...' अकेले भाषा है. 'मुनिराज बस अकेले चैतन्यमें मस्त होकर निवास करते हैं.' आहाहा..!

'आत्मामेंसे बाहर आये तो श्रुतादिके चितवनमें चित्त लगता है...' अंतरमेंसे बाहर आये तो शास्त्र स्वाध्याय करते हैं. 'और फिर अंतरमें चले जाते हैं.' आहाहा..! यह संयम. आज संयमका दिन है. सुगंध दसमी. दसमी है न? सुगंध दसमी. सुगंध कौन-सी? यह सुगंध. आत्माकी सुगंध. आहाहा..! आत्मामेंसे अतीन्द्रिय आनंद आता है, वह आत्मामें सुगंध है. आहाहा..! बात ही अलग है. आहा..!

यहां कहते हैं, धर्मात्मा मुनिराज तो अपने चैतन्यमें ही मस्त रहते हैं. कभी अंदर नहीं रह सके तो शास्त्र वाचनमें आ जायें. फिर अंतरमें चले जाते हैं. छठे-सातवें गुणस्थानमें रहते हैं. मुनिको छठे-सातवां गुणस्थान अके क्लेशमें दो बार आता है. छठे आते हैं, क्लेशमें समममें विकल्प छूटकर निर्विकल्प आनंदमें आ जाते हैं. जाते हैं, पीते हैं, ओलते हैं, चलते हैं, लेकिन छठे-सातवेंमें आ जाते हैं.

आलाला..! अरेरे..! यह भी मालूम नहीं।

‘स्वप्नके जूलेमें जूलते हैं.’ आला..! जूला जैसे जूलता है, वैसे मुनिराज तो स्वप्नके जूलेमें जूलते हैं. उसको संयम कलते हैं. आलाला..! अंतर स्वप्न आत्माका चैतन्य, रागके विकल्पसे भिन्न यीज, उसके अनुभवमें वे जुलते हैं. आलाला..! ‘मुनिराजको एक आत्मवीनताका ही काम है.’ है तो यह एक ही काम है. उपदेश करना, दुनियामें पुस्तक बनाना, यह करना, वह करना वह कुछ उनका काम नहीं है. वह तो बन जाओ तो बन जाओ, उसके कारणसे. यह टीका अमृतचंद्राचार्यने बनायी. टीका करते दुआे आभिरमें ऐसा कला, मैंने टीका नहीं बनायी है. वह तो शब्दसे बन गयी है. मैं तो मेरे ज्ञानस्वप्नमें गुप्त हूं. मैं विकल्पमें आया नहीं. टीका मेरेसे बनी है, जैसे मानना नहीं. आलाला..! गजब बात! समयसारकी टीका है न! अभी भरतक्षेत्रमें ऐसी टीका है ही नहीं. ऐसी टीका. एक-एक शब्दमें गंभीरताका पार नहीं. ओलो..! गूढ भाषा. ऐसी टीका बनाकर कलते हैं कि मैंने बनायी नहीं है, हां! भाई! वह जडकी पर्यायसे बन गई है. मैं तो मेरे ज्ञानस्वप्नमें गुप्त हूं. आलाला..! ये मुनिराज. है?

‘मुनिराजको एक आत्मवीनताका ही काम है. अद्भुत दशा है.’ वह कोई अलौकिक दशा है, बापू! आलाला..! ३६४ हुआ न? फिर? ३६६?

तीन लोकको ज्ञाननेवाला तेरा तत्त्व है उसकी महिमा तुझे क्यों नहीं आती? आत्मा स्वयं ही सर्वस्व है, अपनेमें ही सब बरा है. आत्मा सारे विश्वका ज्ञाता-दृष्टा एवं अनंत शक्तिका धारक है. उसमें क्या कम है? सर्व ऋद्धि उसीमें है. तो फिर बाह्य ऋद्धिका क्या काम है? जिसे बाह्य पदार्थोंमें कौतूहल है, उसे अंतरकी रुचि नहीं है. अंतरकी रुचिके बिना अंतरमें नहीं पहुंचा जाता, सुप्त प्रगट नहीं होता. ३६६.

३६६. ‘तीन लोकको ज्ञाननेवाला तेरा तत्त्व है.’ प्रथम पंक्ति. आलाला..! ‘तीन लोकको ज्ञाननेवाला...’ क्या कलते हैं? तीन लोकमें अपनी कोई यीज है ऐसा माननेवाला आत्मा नहीं है. अपने सिवा-अलावा सब यीज, विकल्पसे लेकर कोई यीज मेरी है, ऐसा मुनि, समकित्ती मानते नहीं. आलाला..! ‘ऐसा तीन लोकको ज्ञाननेवाला तेरा तत्त्व है...’ ज्ञाननेवाला तत्त्व है. तीन लोकमें कोई यीजको करे, बनावे, रचे, व्यवस्था करे व्यवस्थापक होकर (ऐसा तत्त्व नहीं है). सेठने कला था न? व्यवस्थापक. प्रश्न किया था. किसीकी व्यवस्थान करनेवाला व्यवस्थापक. आलाला..!

यहां कलते हैं कि तेरा तत्त्व तो तीन लोकको ज्ञाननेवाला तेरा तत्त्व है. आला..! अक दया, लकितके रागसे लेकर पूरी दुनियाको ज्ञाननेका आत्माका स्वभाव है. रागका करना वल भी आत्माका स्वभाव नहीं है. आलाला..! अरे..! कल बैके? 'उसकी मलिमा तुजे क्यों नहीं आती?' तीन लोकको ज्ञाननेवाला तेरा तत्त्व है, उसकी मलिमा तुजे क्यों नहीं आती है? आलाला..! 'आत्मा स्वयं ही सर्वस्व है,...' आत्मा स्वयं ही सर्वस्व है. ज्ञान वल, आनंद वल, वीर्य वल, शांति वल, पुरुषार्थ वल, वही सब है. अंदरमें सब लरा है. आलाला..! 'आत्मा स्वयं ही सर्वस्व...' कोर भी अल्पता उसमें है नहीं. पूरुणानंदका नाथ, अक-अक गुण पूरुण अैसे अनंत गुणका पूरुण नाथ आत्मा है अंदर. अरेरे..! उसके सामने कली देजा नहीं और उसका अनादर करके, जगतका आदर करके (लटका). जिसका आदर किया उसका संयोग मिले बिना रहे नहीं. तो परिभ्रमणमें रभडेगा. आलाला..!

यहां तो कलते हैं, 'आत्मा स्वयं ही सर्वस्व है, अपनेमें ही सब लरा है.' है? अपनेमें ही. अपनी चीजमें ही सब लरा है. अतीन्द्रिय आनंद लरा है, अतीन्द्रिय शांति लरी है, अनंत ज्ञान है, अनंत दर्शन है, अनंत वीर्य है.. ओलो..! अनंत दर्शनउपयोग है, अनंत प्रभुता है, अनंत परमेश्वरता है. अैसी अनंत-अनंत शक्तिका तो लंडार तेरा है. आलाला..! मौजूदगी रभनेवाली चीज है, उसकी नजर न करे और मौजूद नहीं है, अनित्य है (उस पर नजर करता है). क्योंकि अपना स्वभाव ध्रुव है, नित्य है, अैसा परिणाम ज्ञानता है. ध्रुवको ध्रुवपने नहीं ज्ञाना तो दूसरी चीजको ध्रुव करनेकी र्छा है. दूसरी चीज लमेशा रहे अैसी लावना है. मेरी चीज कायम रहे अैसी लावना छोडकर, यल चीज कायम रहे (अैसी लावना लाता है). आलाला..! समजमें आया?

ध्रुव तो यल आत्मा लगवान है. अैसा पर्याय ज्ञानती है. वल पर्याय ध्रुवको नहीं ज्ञानती है, तल परको कायम रभनेका लाव (करती है). जैसे कायम स्वयं रहता है, अपनी लबर नहीं तो दूसरी चीज कायम रहे-स्त्री, कुटुंब, परिवार, लक्ष्मी, र्छत, मकान.. आलाला..! जे नाशवान, क्षणमें नाशवान (है). आलाला..! अपनी ध्रुवता, अपनी नित्यता कायम रहनेकी लावना नहीं है. है कामय रहनेवाली चीज, उसकी दृष्टि नहीं है तो परको कायम रभनेका लाव है. आलाला..! अैसी लात है. पुस्तकमें माल-माल आ गया है. आलाला..!

कल तो अक वैष्णवका.. कौन वल? मकोडी डोक्टर. डोक्टर? राजकोट. व्याज्यानमें लमेशा आते थे. वैष्णव अन्यमति. उसने लिजा है, मासिक. ललिनके जन्मदिनका

लेज. वह गया और पढकर... कल पत्र आया है. आलाला..! इसमें क्या-क्या नहीं है? इसमें सब भरा है. आलाला..! इस पुस्तकको तो.. क्या कला? म्युजियममें (रचना चाहिये). संग्रहालय. ऐसा बोला. चंद्रभाई पढकर सुनाते थे. वह राणकोटसे आया है. आलाला..!

यहां कहते हैं, 'अपनेमें ही सब भरा है. आत्मा सारे विश्वका ज्ञाता-दृष्टा...' आलाला..! भगवान आत्मा सारे विश्वका. सारे अर्थात् पूरा विश्व. विश्व अर्थात् समस्त पदार्थ. देव, गुरु, शास्त्र या स्त्री, कुटुंब, परिवार और यह शरीर, वाणी और मन. 'सारे विश्वका ज्ञाता-दृष्टा...' है. ज्ञाननेवाला और दृष्टा-देखनेवाला है. 'अवं अनंत शक्तिका धारक है.' ऐसी तो अनंत शक्ति. ज्ञाता-दृष्टा तो है, उसके सिवा अनंत शक्तिका धारक है. आलाला..! ज्वतर शक्ति, चिति, दर्शि, ज्ञान, सुभ, वीर्य, प्रभुत्व, विभुत्व ऐसी अनंत शक्तिको धारण करनेवाला है. आत्माको समजनेका प्रयत्न नहीं और दूसरी चीजमें पूरी जिदगी निकाव दे. आलाला..! उससे परिभ्रमणमें जाये. जाये कलांका कलां भव करे.. आलाला..! अनंत कालमें मनुष्यपना मिलना मुश्किल. आलाला..!

'उसमें क्या कम है?' है? उसमें क्या कमी है? भजनमें नहीं आया था? प्रभु मेरे तू सब जाते पूरा, प्रभु मेरे तू सब जाते पूरा.

परकी आश कलां प्रीतम, हे प्रिय आत्मा! अपनेको छोडकर 'परकी आश कलां करे प्रतीम, किरण जाते तू अधूरा?' तू किस जातसे अधूरा है? प्रभु! आलाला..! भक्ति आती है, भजन आता है. लिंमतभाई अक बार बोले थे. आलाला..!

'उसमें क्या कम है?' तेरेमें क्या कमी है? प्रभु! अनंत आनंद, अनंत ज्ञान, अनंत शांति, अनंत स्वच्छता, अनंत प्रभुता-परमेश्वरता (भरी है). तुम परमेश्वर हो, भगवान हो. आलाला..! ऐसी शक्ति और स्वभाव तेरा अंदरमें पडा है. 'सर्व ऋद्धि उसीमें है.' आनंदकी, ज्ञानकी, शांतिकी ऋद्धि आत्माकी सब ऋद्धि तेरेमें है. 'तो फिर बाह्य ऋद्धिका क्या काम है?' आलाला..! तो फिर बाह्य ऋद्धिका क्या काम है? तेरेमें अंदर अनंत शांति आदि समृद्धिकी ऋद्धि भरी है. अनंत! तो फिर तुझे बाह्यका क्या काम है? प्रभु! कठिन जात. कियाकांड करे तो उसे सूज पडे. व्रत करे, तपस्या करे, आलाला..! वह तो रागकी मंदता है, कोई धर्म तो है नहीं. आलाला..!

वह यहां कहते हैं, 'जिसे बाह्य पदार्थोंमें कौतूहल है...' जिसको बाह्य पदार्थमें... आलाला..! अपने सिवा कोई भी चीजमें विस्मयता है, कौतूहल है, डीक है, आश्चर्य

है, ऐसा है उसको आत्माका अनादर है. 'उसे अंतरकी रुचि नहीं है.' है? आह्ला..! 'जिसे बाह्य पदार्थोंमें कौतूहल है...' कौतूहल नाम विस्मयता, अधिकता, आश्चर्यता, विशेषता, अपने सिवा बाह्य पदार्थमें कुछ भी विशेष, विस्मय, आश्चर्य लगे,.. आह्ला..! उसे अंतरकी रुचि नहीं. आह्ला..! उसे अंतरमें आत्मा अनंत ऋद्धिका धनी है, उसकी रुचि नहीं है.

'अंतरकी रुचिके बिना अंतरमें नहीं पहुंचा जाता,...' आह्ला..! अंतर स्वभाव चैतन्यमूर्ति प्रभु, उसकी रुचि बिना.. क्योंकि रुचि अनुयायी वीर्य. जहां रुचि है, वहां वीर्य काम करता है. जिस ओरकी रुचि है वहां पुरुषार्थ काम करता है. जो आत्माकी रुचि हो तो पुरुषार्थ वहां काम करे. बाह्यमें रुचि है तो पुरुषार्थ बाह्यमें काम करता है. भावमें. काम कर नहीं सकता. आह्ला..! अकेले हीरे भरे हैं!! आह्ला..! हीरेका.. मकोड़ी कला न? डॉक्टर, वैष्णव. राजकोटमें नवरंगभाईके यहां आये. उसका पत्र आया, ठस बार मासिक पत्र पढकर. अपना मासिक है न? आत्म धर्म. बलिनके जन्म दिवसका पढकर भुश हो गया. आह्ला..! ठसमें क्या है! बलिनके वयनामृतमें क्या बाकी है? ओहो..! वैष्णव. मध्यस्थ आदमी हो, कुछ सत्यकी जिज्ञासा करनेकी रुचि हो, कुछ रुचि हो तो उसको महिमा आये बिना रहे नहीं. आह्ला..! यह चीज!

'अंतरकी रुचिके बिना अंतरमें नहीं पहुंचा जाता,...' आह्ला..! बाहरकी रुचिमें बाहर ही रुक जाता है. अंतरकी रुचि बिना अंतरमें जा सकता नहीं. आह्ला..! ज्ञानका सूक्ष्म उपयोग करके अंदरमें पकडना, वह रुचि बिना हो सकता नहीं. आह्ला..! रुचि कहीं रुक गઈ है. जो अंतरमें पकडनेकी शक्ति नहीं है, तो रुचि कहीं न कहीं अटक गઈ है. आह्ला..! उसको छोडकर अंदरमें जाता नहीं. आह्ला..! 'रुचिके बिना अंतरमें नहीं पहुंचा जाता, सुभ प्रगट नहीं होता.' अंतरमें गये बिना आनंद नहीं आता. आह्ला..!

मुमुक्षु :- कालवन्धि..

उत्तर :- नहीं, नहीं, नहीं. पत्र देखा तो पहले हमारे पास आता था. मैं तो उसको ऐसा जवाब देता था कि कालवन्धि तुमने भाषा सुन ली है न? कालवन्धिका यथार्थ ज्ञान किया है? यदि कालवन्धिका ज्ञान कर ले तो दृष्टि अंदरमें गई, उसको कालवन्धिका ज्ञान होता है. यह (यथा) तो हमारे साथ (संवत्) १९९०की सालसे राजकोटमें संप्रदायमें चलती थी. कालवन्धि होगी तब चले. अरे..! संप्रदायमें पहले चलती थी न. (संवत्) १९७२की साल, ७२की साल. कितने साल लुअे? ६४. साठ

और चार. हमारे गुरुभाई बारंबार ऐसा कहते थे कि भगवान केवलीने देखा होगा तब पुरुषार्थ होगा. अपने क्या करे? ऐसा कहते थे. यह तो ७२की साल. सेठ! आलाला..! हम तो सुनते थे. दो सालकी दीक्षा (थी). १९७०में दीक्षा (ली). १९७२ तक दो साल सुना. भगवानने देखा होगा वैसा होगा, अपने क्या करे? अरे..! मैंने कहा, सुनो! दो साल सुना. अब मुझसे रहा नहीं जाता.

भगवान केवलज्ञानी जगतमें हैं, अक ज्ञानगुणकी अक पर्यायमें तीन काल तीन लोक जानते हैं, ऐसी पर्यायकी सत्ता जगतमें है, ऐसा स्वीकार किये बिना केवलीने देखा वैसा होगा, ऐसा कहाँसे आया? सेठ! केवलीने देखा, तो केवलज्ञानी है ऐसी प्रतीति है? प्रतीतिके बिना तू जैसे ही बात करता है. आलाला..! किसे पडी है? बहुत चली थी. हमारे गुरु तो बेचारे लड्डिक थे. बहुत गंभीर थे. उन्हें यह बात मालूम नहीं थी. आलाला..!

भगवानने देखा वैसा होगा. बात तो ऐसी ही है. स्वामी कार्त्तिकेयमें लिखा है. स्वामी कार्त्तिकेय. जैसे भगवानने देखा, जिस समय, जिस कालमें जहां होगा वह होगा. उसमें शंका करे वह मिथ्यादृष्टि है. परंतु उसकी दृष्टि है कहाँ? आलाला..! भगवानने देखा तो भगवानकी दृष्टि, भगवानका जो ज्ञान है, उस ज्ञानकी जिसको प्रतीति दुर्घ,.. आलाला..! जैसे ही बात करे... कालवन्धिका आता है उसमें-कलशटीकामें. दूसरी जगह कालवन्धि आदि आता है. कालवन्धि आदि. यहां अकेली कालवन्धि ली है. परंतु कालवन्धि.. बापू! संसारके कोई काममें तू कभी ऐसा विचार करता है कि कालवन्धि पकी नहीं, इसलिये काम नहीं हुआ. यहां तू ऐसा विचार करता है? और आत्माके धर्मका विचार करता है, तब कालवन्धि पकेगी तब धर्म होगा. तुझे आत्माकी रुचि नहीं है. आलाला..! संसारका काम करनेमें कभी विचार करता है? कि कालवन्धि होगी तब मिलेगा, पैसा मिलेगा, स्त्री मिलेगी, ईश्वर मिलेगी, ऐसा विचार करता है? यहां तो कहता है, मैं पुरुषार्थ करूंगा तो मिलेगा. आलाला..! तेरा पागलपन तो देखा. ये पागलपना! परकी चीजमें तुझे कालकी दरकार नहीं और तेरी चीजमें कालकी दरकार! और तेरा पुरुषार्थ जब अंदरमें जायेगा, तेरी कालवन्धि पक जायेगी.

टोडरमलज तो यहां तक कहते हैं, मोक्षमार्ग प्रकाशकमें, आलाला..! कालवन्धि और भवितव्यता कोई वस्तु नहीं है, ऐसा लिखा है. जिस समय तू काम करेगा, वह कालवन्धि. और उस समय भाव आया वह भवितव्यता. मोक्षमार्ग प्रकाशक. टोडरमल. ओहोहो..! हजारों बोलका स्पष्टीकरण किया है. ऐसा स्पष्टीकरण करते-

કરતે બ્રાહ્મણમેં વિરોધ હો ગયા. બ્રાહ્મણમેં વિરોધ હો ગયા તો બ્રાહ્મણને ઐસા ક્રિયા ક્રિ ઉસકી... ક્યા કલતે હેં? જેબમેં શંકરકી મૂર્તિ રખ દી. ગુમતાસે. ઔર રાતકો રાજાકો કલા, પ્રભુ! યહ શંકરકી મૂર્તિકા અનાદર કરતે હેં. કૌન જાને કેસા કાલ! આહાહા..! રાજાને હુકુમ ક્રિયા, હાથીકે પૈરોં તલે કુચલ દો. અરર..ર..! મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશક બનાનેવાલે. રાજાને હુકુમ કર દિયા, હમારે પરમેશ્વરકા અનાદર કરતે હો, મૂર્તિ જેબમેં રખતે હો? ગુંજા.. ગુંજા સમજે? જેબ. આહાહા..!

હાથીકો કલા, ઈસે માર દે. હાથી મારતા નહીં થા. હાથી ડરતા થા બેચારા. અરેરે..! ઈસ મનુષ્યકો કૂચલ દૂં? ટોડરમલજી બોલે, અરે..! હાથી! રાજાકો દરકાર નહીં હૈ તો તુજે ક્યોં દરકાર હોતી હૈ? પૈર રખ દે. પૈર મેરે પર રખ. પૈર રખા, કૂચલ દિયા. દેહ છૂટ ગયા. આહાહા..! ઐસા કાલ. ઉસ વક્ત કોઈ જૈન હોગા, નહીં હોગા, ક્યા (હોગા)? જૈન બિનાકી નગરી તો હોગી નહીં. પરંતુ રાજાકા હુકમ હુઆ વહાં..

ઈસલિયે વે કલતે હેં, વહાં કાલલબ્ધિ નહીં દેખતા. આત્મામેં પુરુષાર્થ કરના હૈવહાં કાલલબ્ધિ દેખે તો ઉસકો આત્માકી દરકાર, રુચિ હૈ નહીં. આહા..! વહ કલા, દેખો! ‘અંતરકી રુચિકે બિના અંતરમેં નહીં પહુંચા જાતા, સુખ પ્રગટ નહીં હોતા.’ ૩૯૬ હુઆ ન? વિશેષ કહુંગે... (શ્રોતા :- પ્રમાણ વચન ગુરુદેવ!)

